

-=: कया सोवे सुख नींद ::=-

मुसाफिर परदेशी रे, कया सोवे सुख नींद ।

बटाऊ भोला परदेशी रे. कया सोवे सुख नींद ॥

राम नाम का सुमिरण करले, हरी का ध्यान हिरदै बिच धरले ।

साधो भाई रे छोड़ दे कपट का जंजाल, कटेगी तेरी चौरासी रे ॥ १ ॥

आगे आगे गाँव ठगा की नगरी, छीन लेगा हीरा की गठड़ी ।

साधो भाई रे बे चोरण का है गाँव, न्याय तेरो कुण करसी रे ॥ २ ॥

गगन मण्डल में उरध मुखी कुआ, सब साधन मिल प्रसन्न हुआ ।

साधो भाई रे तरबीणी के घाट उतर, मल मल न्हासी ॥ ३ ॥

नाथ गुलाब गुरू पूरा पाया, जाळ जुलम सब दूर हटाया ।

साधो भाई रे गुण गावै भानीनाथ, गुराजी ल्याया रंगबूटी रे ॥ ४ ॥

जय श्री नाथ जी की...